PR PROFESSIONALS
Race for Excellence

the pioneer

Publication	The Pioneer
Language/Frequency	English/Daily
Page No	04
Date	27th Nov 2018

Gurugram vet hospital gets a new CT scan and Ophthalmology Unit

PNS ■ NEW DELHI

CGS hospital, DLF Phase 3, Gurugram recently launched two new facilities at its premises, a CT scan, and Ophthalmology Unit. The CT scan machine for pets with the price of 2 Crore will be first in India. Presently, machines that are used for humans scan pets too. The new machine will make the surgical approach easier and reduce the surgical time.

The new ophthalmology unit will help to treat eye-related ailments including cataract which has become common in dogs. In India, the treatment of this is currently not available.CGS Hospital is a part of Charitable Trust under DLF Foundation, the philanthropic arm of DLF Ltd.

The hospital extends over a large area of more than one acre. Services like diagnostic endoscopy, laparoscopy, echocardiography, and minimally invasive orthopedic surgery are provided by it. Samar S. Mahendran, Director, CGS hospital, said heart disease, diabetes, and kidney stones have become common among dogs and cats and there is a need to have medical advancements in veterinary hospitals. We aim to set high standards in pet care and the CT scan and ophthalmology unit will help us serve her furry friends more efficiently."

Publication	DNA
Language/Frequency	English/Daily
Page No	03
Date	27th Nov 2018

DNA

CT scanner and Ophthalmology Unit for pets

DNA Correspondent
correspondent@dnaindia.net

A computed tomography (CT) scanner and ophthalmology unit was inaugurated recently at CGS hospital DLF Phase 3, Gurugram.The CT scan machine for pets with the price of 2 Crore will be first in the private sector in India. Presently, machines that are used for humans were scarcely employed.

The new machine will make the surgical approach easier and reduce the surgical time as the installment of these will aid the veterinarians in spotting the exact location of the tumors. The ophthalmology unit will help to treat eye-related ailments including cataract which has become common in dogs. In India, the treatment of this is limited due to the lack of advanced facilities. CGS Hospital is a part of Charitable Trust under DLF Foundation, the philanthropic arm of DLF Ltd.

Samar S. Mahendran, Director, CGS hospital, said heart disease, diabetes, and kidney stones have become common among dogs and cats and there is a need to have medical advancements in veterinary hospitals. We aim to set high standards in pet care and the CT scan and ophthalmology unit will help us serve our furry friends more efficiently"

PR PROFESSIONALS
Race for Excellence

Publication	Dainik Jagran
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No	II
Date	27th Nov 2018

दैनिक जागरण

जानवरों के सीटी स्कैन का उद्घाटन

जासं, नया गुरुग्राम : पालतू जानवरों के इलाज के लिए डीएलएफ फेज-3 स्थित सीजीएस अस्पताल में लगे सीटी स्कैन व ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट का रविवार को उद्घाटन किया गया। डीएलएफ फाउंडेशन द्वारा कॉरपोरेट सोशल रेस्पांसिबिलिटी के तहत चलाए जा रहे इस अस्पताल के प्रबंधन के अनुसार देश में पहली बार किसी इस तरह के पशु चिकित्सालय में सिटी स्कैनर लगाया गया है। सीजीएस अस्पताल के निदेशक डा. समर एस महेंद्र ने बताया कि अबतक पशुओं की चिकित्सा के लिए मनुष्यों के प्रयोग में लाए जाने वाले सिटी स्कैनर का ही प्रयोग किया जाता रहा है। दो करोड़ कीमत वाली इस मशीन का पालतू जानवरों के ट्यूमर का पता लगाने में भी मदद ली जाएगी। कुत्ते और बिल्लियों में होने वाले कैंसर के स्तर को इसकी सहायता से पहचाना जा सकेगा। अस्पताल में पटना, इंदौर, असम और दक्षिण भारत से औसतन 150 बीमार पशु रोज आते हैं।

पालतू जानवरों के इलाज के लिए डीएलएफ फेज-3 स्थित सीजीएस अस्पताल में लगाई गई सीटी स्कैन मशीन ● जागरण

PR PROFESSIONALS
Race for Excellence

Publication	Punjab Kesari
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No	01
Date	27th Nov 2018

पंजाब केसरी

यहां इंसानों से अच्छा होता है कुत्तों का इलाज

दिल्ली एनसीआर सहित उत्तर भारत के कुत्ते-बिल्लियों की अलग ओपीडी

गुड़गांव, 26 नवम्बर (संजय): शहर में इलाज के लिए लोग भले ही पसीने बहाते हों, लेकिन यहां कुत्ते-बिल्लियों के इलाज के लिए बेहतरीन व्यवस्था है। डीएलएफ फेज-3 स्थित सीजीएस अस्पताल में प्रतिदिन 100 से 200 कुत्ते व बिल्लियों का इलाज किया जाता है। अस्पताल अधिकारियों के मुताबिक यहां पर गुड़गांव से लेकर उत्तर भारत के आखिरी छोर आसाम तक से कुत्ते-बिल्ली इलाज के लिए लाए जाते हैं।

अस्पताल में जहां वातानुकूलित 24 घंटे इमर्जेंसी सेवाएं हैं, वहीं 20 बिस्तरों का अत्याधुनिक वार्ड भी है।

खास बात ये है कि कुत्ते-बिल्लियों की जांच के लिए 2 करोड़ रुपए की सीटी स्कैन मशीन भी है। दावों के मुताबिक देश में यह सबसे महंगी मशीन है।

> शहर में अभी तक कुत्ते बिल्लियों के लिए अत्याधुनिक स्तर का कोई अस्पताल व जांच केन्द्र नहीं था। बड़ी तादात में यहां लोग महंगे व विशेष नस्ल की प्रजातियां अपने घरों में पालते हैं। लिहाजा बीमारी की अवस्था में दूर दराज तक कोई अस्पताल नही था, जिसे देखते हुए इसकी शुरुआत की गई है।
>
> *-डॉ. महेन्द्रण, अस्पताल संचालक*

पंजाब केसरी स्पेशल

अस्पताल अधिकारियों की मानें तो यहां बीमार कुत्तों के इलाज के साथ रोजाना 5 से 6 सर्जरी भी की जाती है। इसके अलावा जांच के लिए रोजाना सुबह 7 बजे से शाम 8 बजे तक ओपीडी सेवाएं संचालित हैं।

डीएलएफ फाउंडेशन द्वारा संचालित यह अस्पताल लोगों में तेजी से बढ़ रहे पालतू जानवरों के पालने की आदत को देखते हुए बनाया गया है।

बता दें कि गुड़गांव में 50 हजार से लेकर 5 लाख तक के कुत्ते लोगों द्वारा पाले जा रहे हैं।

लुक व हेयर स्टाइल के लिए ब्यूटी पार्लर

चिकित्सकों की मानें तो अस्पताल में न केवल जांच, इलाज व ऑपरेशन की सुविधा है, बल्कि यहां कुत्ते बिल्लियों के लिए ब्यूटी पार्लर की सुविधा भी है। यहां चेहरों को सजाने संवारने के अलावा उनके बालों की हेयर स्टाइल से लेकर डिजाइनरों द्वारा विशेष लुक देने की व्यवस्था है।

- **वातानुकूलित इमर्जेंसी व 20 बेड की क्षमता वाला विशेष वार्ड, लुक व हेयर स्टाइल के लिए ब्यूटी पार्लर, जांच के लिए 2 करोड़ की मशीन**

गुड़गांव से लेकर आसाम तक के मरीज

चिकित्सकों की माने तो केवल गुड़गांव ही नही, बल्कि यहां पर आ रहे कुत्ते गुड़गांव के अलावा जयपुर, पटना, इंदौर, लखनऊ व आसाम तक से मरीज लाए जा रहे है। यहां विशेषज्ञों द्वारा जांच के बाद सर्जरी से लेकर आर्गन ट्रांसप्लाट तक किया जाता है। बताया गया है कि कुत्तों व बिल्लियों के लिए इस तरह का अस्पताल पूरे उत्तर भारत का पहला अस्पताल है।

माइक्रोबायोलॉजी व पैथ लैब की सुविधा

रक्त, त्वचा, बलगम सहित अन्य कई जांच के लिए माइक्रोबायोलॉजी व पैथ लैब की सुविधा भी है। आमतौर इंसानों के सभी अस्पतालों में इस तरह की सुविधा नही होती। बताया जा रहा है कि उच्चस्तरीय यंत्रों व मशीनों से उनकी बीमारियों की जांच की जाती है।

कुत्ते-बिल्लियों की जांच के लिए 2 करोड़ रुपए की सीटी स्कैन मशीन। (अभिषेक)

PR PROFESSIONALS
Race for Excellence

Publication	Dainik Jagran
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No	III
Date	27th Nov 2018

दैनिक जागरण

संगीत में फ्यूजन तो चल सकता है लेकिन कन्फ्यूजन नहीं : शुभा मुद्गल

ख्याल, ठुमरी व दादरा जैसे शास्त्रीय संगीत और इंडीपॉप के फ्यूजन को हिंदुस्तानियों के दिलों में अमर कर देने वाली सिंगर शुभा मुद्गल ने लोक गायिकी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। 23 जून 1959 को इलाहाबाद में जन्मी शुभा मुद्गल की गायकी उन घटाओं की तरह है, जिसमें हर किसी का भीग जाने का मन करता है। आज के दौर में भी उनकी आवाज हिंदुस्तानी गानों में उस खालीपन को भरती है, जिनमें रोमानी अंदाज और संजीदगी की जरूरत है। संगीत प्रेमियों को मोहने वाले 'अली मोरे अंगना', 'प्यार के गीत सुना जा रे', 'मन के मंजीरे' से लेकर 'अब के सावन ऐसे बरसे' जैसे उनके दर्जनों गीतों की रवानी और ताजगी आज भी कायम है। रविवार को साइबर सिटी में डीएलएफ फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में प्रस्तुति देने पहुंची शास्त्रीय गायिका पद्मश्री शुभा मुद्गल से दैनिक जागरण संवाददाता हंस राज की बातचीत के खास अंश :

साक्षात्कार

● संगीत की ओर आपका रुझान कब और कैसे हुआ ?

-मेरा जन्म इलाहाबाद में हुआ है। वहीं परवरिश भी हुई। शुरुआती पढ़ाई से लेकर संगीत सीखने तक सब कुछ वहीं हुआ। अभिभावकों की कला, थिएटर और विजुअल आर्ट्स में बेहद रुचि थी। शायद इसीलिए माता-पिता ने कभी नहीं कहा कि आगे बोर्ड परीक्षा है, आर्ट एक्टिविटीज बंद कर दो। बचपन से ही कला हमारी जिंदगी का हिस्सा रही। डायनिंग टेबल पर भी कला को लेकर बातचीत होती थी। घर का पूरा माहौल ही ऐसा था कि उसमें कला शौक नहीं, साथी की तरह हमेशा हमारे साथ रहती थी। सही एक्सपोजर मिला और अभिभावकों ने अवसर भी दिया। मैंने महज चार साल की उम्र से कथक सीखना शुरू किया था और आगे चलकर गायन से भी खुद को जोड़ लिया।

● वर्तमान दौर में तकनीक का संगीत से कैसा तालमेल देखती हैं?

-तकनीक के शौकीन नए समय के युवा शास्त्रीय संगीतकार अनूठा संगीत रचने के लिए परंपराओं से ऊपर उठकर काम कर रहे हैं। युवा तकनीक के जानकार भी हैं और उनका संगीत सीमाओं को लांघकर नए दर्शकों की तलाश कर रहा है, क्योंकि उनमें घराने की परंपरा से ऊपर उठने का साहस है। परंपरा के साथ ताजगी की जुगलबंदी करने वाले ही संगीत का नवा और अनूठा व्याकरण रच सकता है। यहां जो सबसे अहम है वो संगीत और तकनीक के बीच संतुलन है, क्योंकि संगीत में फ्यूजन तो चलेगा लेकिन कन्फ्यूजन नहीं।

● फिल्मों में शास्त्रीय संगीत के लिए कितनी संभावनाएं है?

-फिल्मों में फिलहाल तो शास्त्रीय संगीत का भविष्य नजर नहीं आता। पहले संगीत निर्देशक शास्त्रीय संगीत में निपुण थे और इसका प्रभाव फिल्मों पर भी दिखता था, लेकिन आज तकनीकी और अन्य संसाधनों के प्रयोग के चलते शास्त्रीय संगीत की फिल्मों में उपयोगिता कम हुई है। ऐसे में पारंपरिक शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ले रहे विद्यार्थियों के लिए यह संघर्ष का समय है। सिर्फ इसके जरिये आजीविका चलाना मुश्किल है। जरूरी है कि जो कर रहे हैं उसमें नयापन लाएं, और इसमें कोई बुराई नहीं है। संगीत के साधकों को एक और बात की गांठ बांध लेनी चाहिए कि वो संगीत की विधा में हमेशा विद्यार्थी के रूप में रहें। हमेशा कुछ अलग सीखने, करने की ललक मन में होनी चाहिए फिर फिल्मों के बाहर संगीत की एक विशाल दुनिया उनके स्वागत के लिए तैयार है।

● क्या गजल गायकी की दुनिया में भी एक खालीपन आया है?

-गजल को सुनने-समझने के लिए उर्दू शायरी का भी आनंद लेना जरूरी है, लेकिन हमारी शिक्षा उर्दू पर ध्यान ही नहीं देती और इसीलिए लोग गजलों में गहरे नहीं उतरते। लेकिन, सच यह भी है कि अब पुराने गजल गायक भी कोई नए प्रयास नहीं करते। न यूट्यूब का फायदा उठाकर किसी अनसुनी गजल को संगीतबद्ध करते हैं और न ही नए-महंगे कंसर्ट्स में पुरानी गजलें गाते रहने के अलावा इस जॉनर में कोई खास प्रयोग ही करते हैं। कोई भी स्थापित गायक मीर तकी मीर, मोमिन, गालिब, दाग देहलवी, फैज अहमद फैज, नासिर कादरी, इकबाल, फराज, दुष्यंत कुमार, बशीर बद्र या निदा फाजली जैसे गजलगो तक की अनसुनी गजलों को गाने का प्रयास नहीं कर रहा है।

● इलाहाबाद विश्वविद्यालय और शायर फैज अहमद फैज वाला वाकया क्या है?

-26 अप्रैल 1981 को विश्वविद्यालय में हिंदी अकादमी का कार्यक्रम था और एक छात्रा फैज के सामने उनकी ही एक गजल गाने वाली थीं। तैयारी मेरे गुरु रामाश्रय झा को सौंपी गई थी। कार्यक्रम से कुछ घंटे पहले दरवाजे की घंटी बजी तो देखा कि सामने गुरुजी खड़े हैं। उन्होंने छूटते ही कहा कि मेरे साथ चलो। मैं उनके साथ हिंदी अकादमी पहुंची। वहां उन्होंने बताया कि वह छात्रा गजल नहीं गा पा रही है। तुम्हें फैज की गजल पढ़नी है 'शामे फिराक अब न पूछ।' गजल याद नहीं थी तो पिताजी से पूछकर एक पेज पर लिख लिया और कांपती आवाज में बड़े संकोच के साथ फैज के सामने पढ़ा। फैज साहब ने हाथ में कागज देखकर पूछा कि तुम्हें उर्दू नहीं आती ? मैंने कहा उर्दू सीखी नहीं है, इसलिए मैंने इसे देवनागरी में लिखा है। फैज बोले तुम्हारे तलफ्फुज से तो नहीं लगा कि तुम्हें उर्दू नहीं आती। फिर उन्होंने उस कागज पर अपने ऑटोग्राफ दिए। मैं हक्की-बक्की देखती रह गई कि मुझ जैसी नौसिखिया छात्रा से फैज इतने प्रेम और स्नेह से बात कर रहे थे।

Publication	Amar Ujala
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No	02
Date	27th Nov 2018

अमर उजाला

पशुओं के इलाज के लिए लगी पहली सीटी स्कैन मशीन

गुरुग्राम। पालतू पशुओं को भी बेहतर इलाज मिल सके इसके लिए डीएलएफ फेज-3 स्थित सीजीएस अस्पताल में सीटी स्कैन और ओफ्थाल्मोलॉजी यूनिट शुरू की गई है। इन मशीनों के जरिये पशुओं में ट्यूमर जैसी खतरनाक बीमारी की सटीक जगह की जानकारी मिल पाएगी। उनका उचित समय पर सही उपचार भी संभव हो पाएगा।

चिकित्सकों की मानें तो मशीन की मदद से कुत्ते और बिल्ली को होने वाले कैंसर के स्तर को बेहतर तरीके से पहचाना जा सकेगा। जानवरों की चोटों का इलाज भी इसकी सहायता से हो पाना संभव होगा। पशुओं एवं जानवरों के ओखों से संबंधी बीमारियों के इलाज के लिए भी यहां नेत्र विज्ञान यूनिट बनाई गई है। जानवरों के नेत्र से जुड़े सभी बीमारियों का यहां सही उपचार हो पाएगा। सीजीएस अस्पताल के निदेशक समर एस महेंद्रण ने बताया कि डीएलएफ फाउंडेशन इस अस्पताल का संचालन करता है। यहां रोजाना करीब 100- 200 जानवरों का इलाज एवं 5-6 सर्जरी की जाती हैं। नई मशीनें लगने से डॉक्टरों की सहूलियत के साथ जानवरों को भी सुविधा मिलेगी। ब्यूरो

Publication	Navbharat Times
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No	01
Date	27th Nov 2018

NBT
नवभारत टाइम्स

पेट्स के लिए सीटी स्कैन मशीन

■ एनबीटी न्यूज, गुड़गांव : डीएलएफ स्थित सीजीएस हॉस्पिटल में पालतू जानवरों के लिए पहली सीटी स्कैन मशीन व आंखों की जांच के लिए विशेष यूनिट लगाई गई है। इस अस्पताल में रोजाना करीब 100 पेट्स का इलाज किया जाता है और जरूरत पड़ने पर सर्जरी भी की जाती है। हॉस्पिटल के निदेशक समर एस महेंद्रण ने बताया कि पेट्स के लिए इस प्रकार की सुविधा देश में पहली बार शुरू की गई है। मशीन के जरिए जानवरों में ट्यूमर की सटीक जानकारी मिलेगी।

PR PROFESSIONALS
Race for Excellence

Publication	Pioneer
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No	04
Date	28th Nov 2018

हरियाणा से प्रकाशित
पायनियर
हमेशा सच के साथ
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

देश का पहला पालतू जानवरों का सीटी स्कैन केंद्र गुरुग्राम में

सीजीएस अस्पताल गुरुग्राम में शुरू की गई है यह सुविधा

सीटी स्कैन मशीन की कीमत है दो करोड़ रुपये

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

देश में पालतू जानवरों का पहला सीटी स्कैन (कम्प्यूटिड टोमोग्राफी) केंद्र गुरुग्राम में खुला है। यह केंद्र डीएलएफ फेज-3 स्थित सीजीएस अस्पताल में शुरू किया गया है। यहां सिटी स्कैन के साथ ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट भी शुरू की गई है। इस सीजीएस अस्पताल का संचालन डीएलएफ फाउंडेशन द्वारा किया जा रहा है। एक दिन में करीब 100-200 रोगियों का यहां उपचार और 5-6 सर्जरी की जाती है।

गुरुग्राम के सीजीएस अस्पताल में लगाई गई सीटी स्कैन मशीन।

पालतू जानवरों के लिए स्थापित इस सीटी स्कैन मशीन की कीमत दो करोड़ रुपये हैं, जो भारत में पहली बार लगाई गई है। यहां मशीनों के जरिये ट्यूमर जैसी खतरनाक बीमारी की सटीक जगह की जानकारी अच्छे तरीके से हो पाएगी। इस पूरी प्रक्रिया को करने में पशु चिकित्सकों को आसानी तो होगी ही, साथ ही जानवरों का उचित समय पर सही उपचार भी संभव हो पाएगा। इन मशीन की मदद से कुत्ते और बिल्ली को होने वाले कैंसर के स्तर को बेहतर तरीके से पहचाना जा सकेगा। इसके अलावा सभी जानवरों की चोटों का इलाज भी इसकी सहायता से हो पाना संभव होगा।

भारत के अस्पतालों में पशुओं एवं जानवरों के आंखों से संबंधी बीमारियों के बेहतर इलाज की सुविधाएं अभी उपलब्ध नहीं है। इसलिए अब सीजीएस अस्पताल में नई नेत्र विज्ञान यूनिट की व्यवस्था हो जाने से जानवरों के नेत्र से जुड़े सभी बीमारियों का सही उपचार बहुत आसानी से संभव हो पाएगा। आमतौर पर कुत्तों में मोतियाबिंद से जुड़ी ज्यादा परेशानी सामने आती है, जिसमें यह इकाई बहुत फायदेमंद साबित होगी।

सीजीएस अस्पताल के निदेशक समर एस महेंद्रण ने कहा कि कुत्ते और बिल्लियों में हृदय रोग, मधुमेह, और गुर्दे की पत्थरों जैसी घातक बीमारियां बहुत आम हो गयी है। जिसके लिए पशु पालकों को जागरूक होना बेहद जरूरी है। सीटी स्कैन और ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट के उद्घाटन के अवसर पर शुभा मुद्गल ने कहा कि उनके पास दो पालतू जानवर हैं। शुभा मुद्गल ने अपने कुछ प्रसिद्ध गीतों 'आयो रे आयो रे मारो ढोलना', 'प्यार के गीत' और सीखो न नैनों की भाषा पिया' से दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया और एक यादगार शाम बनाया।

PR PROFESSIONALS
Race for Excellence

Publication	Gurgaon Today
Language/Frequency	Hindi/Daily
Page No	03
Date	27th Nov 2018

गुड़गांव टुडे

पालतू जानवरों के लिए पहला सीटी स्कैन सीजीएस अस्पताल में

गुड़गांव टुडे, गुरुग्राम

पालतू जानवरों के बेहतर इलाज के लिए भारत में पहली बार गुरुग्राम डीएलएफ फेज 3 स्थित सीजीएस अस्पताल में सीटी स्कैन और ओष्थाल्मोलॉजी यूनिट का उदघाटन किया गया। इस मशीन से पालतू जानवरों को इलाज कराना बेहद आसान हो जाएगा। डीएलएफ फाउंडेशन द्वारा संचालित इस अस्पताल में औसतन, एक दिन में लगभग 100-200 रोगियों का इलाज एव 5-6 सर्जरी की जाती है। उद्घाटन समारोह के बाद मशहूर हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका शुभा मुद्गल ने अपने शानदार लाइव परफॉर्मेंस से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पालतू जानवरों के लिए स्थापित इस सीटी स्कैन मशीन की कीमत 2 करोड़ रूपये हैं, जो भारत में पहली बार है। मशीनों के जरिये ट्यूमर जैसी खतरनाक बीमारी की सटीक जगह की जानकारी अच्छे तरीके से हो पाएगी। इस पूरी प्रक्रिया को करने में पशु चिकित्सकों को आसानी तो होगी ही साथ ही जानवरों का उचित समय पर सही उपचार भी संभव हो पायेगा। इन मशीन की मदद से कुत्ते और बिल्ली को होने वाले कैंसर के स्तर को बेहतर तरीके से पहचाना जा सकेगा। इसके अलावा सभी जानवरों की चोटों का इलाज भी इसकी सहायता से हो पाना संभव होगा। भारत के अस्पतालों में पशुओं एवं जानवरों के आंखों से संबंधी बीमारियों के बेहतर इलाज की सुविधाएं अभी उपलब्ध नहीं है। अत: अब सीजीएस अस्पताल में नई नेत्र विज्ञान यूनिट की व्यवस्था हो जाने से जानवरों के नेत्र से जुड़े सभी बीमारियों का सही उपचार बहुत आसानी से संभव हो पायेगा। आमतौर पर कुत्तों में मोतियाबिंद से जुड़ी ज़्यादा परेशानी सामने आते हैं जिसमें यह इकाई बहुत फायदेमंद साबित होगी।

डीएलएफ फाउंडेशन, जो डीएलएफ लिमिटेड का एक अभिन्न हिस्सा है, जो कि एक चैरिटेबल ट्रस्ट है, जिसके तहत सीजीएस अस्पताल की स्थापना हुई है। यह हॉस्पिटल एक एकड़ से भी ज़्यादा क्षेत्र में बनाया गया है। सीजीएस अस्पताल के निदेशक समर एस महेंद्रण ने कहा कि कुत्ते और बिल्लियों में हृदय रोग, मधुमेह, और गुर्दे की पत्थरों जैसी घातक बीमारियां बहुत आम हो गयी है जिसके लिए पशु पालकों को जागरूक होना बेहद अनिवार्य है। हमारा लक्ष्य पालतु जानवरों की देखभाल के लिए पशु पालक को मानकों को निर्धारित करना है और सीटी स्कैन और ओष्थाल्मोलॉजी यूनिट हमे अपने प्यारे दोस्तों को अधिक कुशलता से सेवा करने मे मदद करेगी। सीटी स्कैन और ओष्थाल्मोलॉजी यूनिट उदघाटन के अवसर पर शुभा मुद्गल ने कहा कि मेरे पास दो पालतू जानवर है और सीजीएस अस्पताल एवं उनकी टीम ने अच्छी देखभाल की है। असल में मेरे पालतू जानवरों में से एक का एक महीने पहले बहुत गंभीर मामला था और जिसका जीवन सीजीएस अस्पताल में डॉ. महेंद्रण और उनकी टीम द्वारा बचाया गया। मैं इसके लिए हमेशा उनका आभारी रहूंगी। मेरे पालतू जानवर सीजीएस अस्पताल जाना बेहद पसंद करते हैं और बेहतरीन बुनियादी ढांचे और सेवाओं से यह अस्पताल और भी खास लगता है।

शुभा मुद्गल ने अपने कुछ प्रसिद्ध गीतों आयो रे आयो रे मारो ढोलना, प्यार के गीत और सीखो न नैनों की भाषा पिया से दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया और एक यादगार शाम बनाया।

https://www.jagran.com/haryana/gurgaon-ct-scan-for-animals-inaugrated-18684308.html

जानवरों के सीटी स्कैन का उद्घाटन

पालतू जानवरों के इलाज के लिए डीएलएफ फेज-3 स्थित सीजीएस अस्पताल में लगे सीटी स्कैन व ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट का रविवार को उद्घाटन किया गया। डीएलएफ फाउंडेशन द्वारा कॉरपोरेट सोशल रेस्पां

जासं, नया गुरुग्राम : पालतू जानवरों के इलाज के लिए डीएलएफ फेज-3 स्थित सीजीएस अस्पताल में लगे सीटी स्कैन व ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट का रविवार को उद्घाटन किया गया। डीएलएफ फाउंडेशन द्वारा कॉरपोरेट सोशल रेस्पांसिबिलिटी के तहत चलाए जा रहे इस अस्पताल के प्रबंधन के अनुसार देश में पहली बार किसी इस तरह के पशु चिकित्सालय में सिटी स्कैनर लगाया गया है। सीजीएस अस्पताल के निदेशक डा. समर एस महेंद्र ने बताया कि अबतक पशुओं की चिकित्सा के लिए मनुष्यों के प्रयोग में लाए जाने वाले सिटी स्कैनर का ही प्रयोग किया जाता रहा है। दो करोड़ कीमत वाली इस मशीन का पालतू जानवरों के ट्यूमर का पता लगाने में भी मदद ली जाएगी। कुत्ते और बिल्लियों में होने वाले कैंसर के स्तर को इसकी सहायता से पहचाना जा सकेगा। अस्पताल में पटना, इंदौर, असम और दक्षिण भारत से औसतन 150 बीमार पशु रोज आते हैं।

https://www.jagran.com/haryana/gurgaon-fusion-in-music-can-be-acceptable-but-not-confusion-says-shubha-mudgal-18683854.html

संगीत में फ्यूजन हो लेकिन कन्फ्यूजन नहीं: शुभा मुद्गल

ख्याल, ठुमरी व दादरा जैसे शास्त्रीय संगीत और इंडीपॉप के फ्यूजन को ¨हदुस्तानियों के दिलों में अमर कर देने वाली ¨सगर शुभा मुद्गल ने लोक गायिकी को नयी उंचाईयों तक पहुंचाया है। 23 जून

ख्याल, ठुमरी व दादरा जैसे शास्त्रीय संगीत और इंडीपॉप के फ्यूजन को ¨हदुस्तानियों के दिलों में अमर कर देने वाली ¨सगर शुभा मुद्गल ने लोक गायिकी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। 23 जून 1959 को इलाहाबाद में जन्मी शुभा मुद्गल की गायकी उन घटाओं की तरह है, जिसमें हर किसी का भीग जाने का मन करता है। आज के दौर में भी उनकी आवाज ¨हदुस्तानी गानों में उस खालीपन को भरती है, जिनमें रोमानी अंदाज और संजीदगी की जरूरत है। संगीत प्रेमियों को मोहने वाले 'अली मोरे अंगना', 'प्यार के गीत सुना जा रे', 'मन के मंजीरे' से लेकर 'अब के सावन ऐसे बरसे' जैसे उनके दर्जनों गीतों की रवानी और ताजगी आज भी कायम है। रविवार को साइबर सिटी में डीएलएफ फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में प्रस्तुति देने पहुंची शास्त्रीय गायिका पद्मश्री शुभा मुद्गल से दैनिक जागरण संवाददाता हंस राज की बातचीत के खास अंश :

-- संगीत की ओर आपका रुझान कब और कैसे हुआ ?

मेरा जन्म इलाहाबाद में हुआ है। वहीं परवरिश भी हुई। शुरुआती पढ़ाई से लेकर संगीत सीखने तक सब कुछ वहीं हुआ। अभिभावकों की कला, थिएटर और विजुअल आर्ट्स में बेहद रुचि थी। शायद इसीलिए माता-पिता ने कभी नहीं कहा कि आगे बोर्ड परीक्षा है, आर्ट एक्टिविटीज बंद कर दो। बचपन से ही कला हमारी ¨जदगी का हिस्सा रही। डाय¨नग टेबल पर भी कला को लेकर बातचीत होती थी। घर का पूरा माहौल ही ऐसा था कि उसमें कला शौक नहीं, साथी की तरह हमेशा हमारे साथ रहती थी। सही एक्सपोजर मिला और अभिभावकों ने अवसर भी दिया। मैंने महज चार साल की उम्र से कथक सीखना शुरू किया था और आगे चलकर गायन से भी खुद को जोड़ लिया।

--- वर्तमान दौर में तकनीक का संगीत से कैसा तालमेल देखती हैं?

तकनीक के शौकीन नए समय के युवा शास्त्रीय संगीतकार अनूठा संगीत रचने के लिए परंपराओं से ऊपर उठकर काम कर रहे हैं। युवा तकनीक के जानकार भी हैं और उनका संगीत सीमाओं को लांघकर नए दर्शकों की तलाश कर रहा है, क्योंकि उनमें घराने की परंपरा से ऊपर उठने का साहस है। परंपरा के साथ ताजगी की जुगलबंदी करने वाले ही संगीत का नया और अनूठा व्याकरण रच सकता है। यहां जो सबसे अहम है वो संगीत और तकनीक के बीच संतुलन है, क्योंकि संगीत में फ्यूजन तो चलेगा लेकिन कन्फ्यूजन नहीं।

फिल्मों में शास्त्रीय संगीत के लिए कितनी संभावनाएं हैं?

फिल्मों में फिलहाल तो शास्त्रीय संगीत का भविष्य नजर नहीं आता। पहले संगीत निर्देशक शास्त्रीय संगीत में निपुण थे और इसका प्रभाव फिल्मों पर भी दिखता था, लेकिन आज तकनीकी और अन्य संसाधनों के प्रयोग के चलते शास्त्रीय संगीत की फिल्मों में उपयोगिता कम हुई है। ऐसे में पारंपरिक शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ले रहे विद्यार्थियों के लिए यह संघर्ष का समय है। सिर्फ इसके जरिये आजीविका चलाना मुश्किल है। जरूरी है कि जो कर रहे हैं उसमें नयापन लाएं और इसमें कोई बुराई नहीं है। संगीत के साधकों को एक और बात की गांठ बांध लेनी चाहिए कि वो संगीत की विधा में हमेशा विद्यार्थी के रूप में रहें। हमेशा कुछ अलग सीखने, करने की ललक मन में होनी चाहिए फिर फिल्मों के बाहर संगीत की एक विशाल दुनिया उनके स्वागत के लिए तैयार है।

-- क्या गजल गायकी की दुनिया में भी एक खालीपन आया है?

गजल को सुनने-समझने के लिए उर्दू शायरी का भी आनंद लेना जरूरी है, लेकिन हमारी शिक्षा उर्दू पर ध्यान ही नहीं देती और इसीलिए लोग गजलों में गहरे नहीं उतरते। लेकिन, सच यह भी है कि अब पुराने गजल गायक भी कोई नए प्रयास नहीं करते। न यूट्यूब का फायदा उठाकर किसी अनसुनी गजल को संगीतबद्ध करते हैं और न ही नए-महंगे कंसर्ट्स में पुरानी गजलें गाते रहने के अलावा इस जॉनर में कोई खास प्रयोग ही करते हैं। कोई भी स्थापित गायक मीर तकी मीर, मोमिन, गालिब, दाग देहलवी, फैज अहमद फैज, नासिर कादरी, इकबाल, फराज, दुष्यंत कुमार, बशीर बद्र या निदा फाजली जैसे गजलगो तक की अनसुनी गजलों को गाने का प्रयास नहीं कर रहा है।
इलाहाबाद विश्वविद्यालय और शायर फैज अहमद फैज वाला वाकया क्या है?

26 अप्रैल 1981 को विश्वविद्यालय में ¨हदी अकादमी का कार्यक्रम था और एक छात्रा फैज के सामने उनकी ही एक गजल गाने वाली थीं। तैयारी मेरे गुरु रामाश्रय झा को सौंपी गई थी। कार्यक्रम से कुछ घंटे पहले दरवाजे की घंटी बजी तो देखा कि सामने गुरुजी खड़े हैं। उन्होंने छूटते ही कहा कि मेरे साथ चलो। मैं उनके साथ ¨हदी अकादमी पहुंची। वहां उन्होंने बताया कि वह छात्रा गजल नहीं गा पा रही है। तुम्हें फैज की गजल पढ़नी है 'शामे फिराक अब न पूछ।' गजल याद नहीं थी तो पिताजी से पूछकर एक पेज पर लिख लिया और कांपती आवाज में बड़े संकोच के साथ फैज के सामने पढ़ा। फैज साहब ने हाथ में कागज देखकर पूछा कि तुम्हें उर्दू नहीं आती? मैंने कहा उर्दू सीखी नहीं है, इसलिए मैंने इसे देवनागरी में लिखा है। फैज बोले तुम्हारे तलफ्फुज से तो नहीं लगा कि तुम्हें उर्दू नहीं आती। फिर उन्होंने उस कागज पर अपने ऑटोग्राफ दिए। मैं हक्की-बक्की देखती रह गई कि मुझ जैसी नौसिखिया छात्रा से फैज इतने प्रेम और स्नेह से बात कर रहे थे।

https://indianow24.com/2018/11/26/%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%A4%E0%A5%82-%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%82-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%8F-%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4/

पालतू जानवरों के लिए भारत का पहला सीटी स्कैन गुरुग्राम के सीजीएस अस्पताल में

पालतू जानवरों के लिए भारत का पहला सीटी स्कैन गुरुग्राम के सीजीएस अस्पताल में

-डीएलएफ़ फेज 3 स्थित सीजीएस अस्पताल, भारत का पहला अस्पताल जिसमे सीटी स्कैन और ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट की सुविधा

-अब पालतू जानवरों का बेहतर इलाज़ गुड़गाँव के सीजीएस अस्पताल में

-पालतू जानवरो के लिए इस मशीन के उदघाटन समारोह में मशहूर गायिका शुभा मुद्गल ने बांधा समां

रिपोर्टर योगेश गुरुग्राम India Now24

गुरुग्राम: पालतू जानवरों के बेहतर इलाज के लिए भारत में पहली बार गुरुग्राम डीएलएफ फेज 3 स्थित सीजीएस अस्पताल में सीटी स्कैन और ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट का उदघाटन किया गया। इस मशीन से पालतू जानवरो को इलाज़ कराना बेहद आसान हो जाएगा। डीएलएफ़ फ़ाउंडेशन द्वारा संचालित इस अस्पताल मे औसतन, एक दिन में लगभग 100- 200 रोगियों का इलाज एव 5-6 सर्जरी की जाती है। उदघाटन समारोह के बाद मशहूर हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका शुभा मुद्गल ने अपने शानदार लाइव परफॉर्मेंस से दर्शको को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पालतू जानवरो के लिए स्थापित इस सीटी स्कैन मशीन की कीमत 2 करोड़ रुपये हैं, जो भारत मे पहली बार है। मशीनों के ज़रिये ट्यूमर जैसी खतरनाक बीमारी की सटीक जगह की जानकारी अच्छे तरीके से हो पाएगी। इस पूरी प्रक्रिया को करने में पशु चिकित्सकों को आसानी तो होगी ही साथ ही जानवरों का उचित समय पर सही उपचार भी संभव हो पायेगा। इन मशीन की मदद से कुत्ते और बिल्ली को होने वाले कैंसर के स्तर को बेहतर तरीके से पहचाना जा सकेगा। इसके अलावा सभी जानवरों की चोटों का इलाज भी इसकी सहायता से हो पाना संभव होगा।

भारत के अस्पतालों में पशुओं एवं जानवरों के आँखों से संबंधी बीमारियों के बेहतर इलाज की सुविधाएं अभी उपलब्ध नहीं है। अतः अब सीजीएस अस्पताल में नई नेत्र विज्ञान यूनिट की व्यवस्था हो जाने से जानवरों के नेत्र से जुड़े सभी बीमारियों का सही उपचार बहुत आसानी से संभव हो पायेगा। आमतौर पर कुत्तों में मोतियाबिंद से जुड़ी ज़्यादा परेशानी सामने आते है, जिसमें यह इकाई बहुत फायदेमंद साबित होगी।

डीएलएफ फाउंडेशन, जो डीएलएफ लिमिटेड का एक अभिन्न हिस्सा है, जो की एक चैरिटेबल ट्रस्ट है, जिसके तहत सीजीएस अस्पताल की अस्थापना हुई है। यह हॉस्पिटल एक एकड़ से भी ज़्यादा क्षेत्र में बनाया गया है।

सीजीएस अस्पताल के निदेशक समर एस महेंद्रण ने कहा कि "कुत्ते और बिल्लियों में हृदय रोग, मधुमेह, और गुर्दे की पत्थरों जैसी घातक बीमारियां बहुत आम हो गयी है जिसके लिए पशु पालकों को जागरूक होना बेहद अनिवार्य है। हमारा लक्ष्य पालतु जानवरों की देखभाल के लिए पशु पालक को मानकों को निर्धारित करना है और सीटी स्कैन और ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट हमे अपने प्यारे दोस्तो को अधिक कुशलता से सेवा करने मे मदद करेगी।"

सीटी स्कैन और ओप्थाल्मोलॉजी यूनिट उदघाटन के अवसर पर शुभा मुद्गल ने कहा कि "मेरे पास दो पालतू जानवर है और सीजीएस अस्पताल एव उनकी टीम ने अच्छी देखभाल की है। असल मे, मेरे पालतू जानवरो मे से एक का एक महीने पहले बहुत गंभीर मामला था और जिसका जीवन सीजीएस अस्पताल में डॉ. महेंद्रण और उनकी टीम द्वारा बचाया गया। मै इसके लिए हमेशा उनका आभारी रहूँगी। मेरे पालतू जानवर सीजीएस अस्पताल जाना बेहद पसंद करते है और बेहतरीन बुनियादी ढांचे और सेवाओं से यह अस्पताल और भी खास लगता है।"

शुभा मुद्गल ने अपने कुछ प्रसिद्ध गीतों – 'आयो रे आयो रे मारो ढोलना', 'प्यार के गीत' और सीखो न नैनों की भाषा पिया' से दर्शको को झूमने पर मजबूर कर दिया और एक यादगार शाम बनाया।

औसतन, एक दिन में लगभग 100- 200 रोगियों का इलाज एव 5-6 सर्जरी की जाती है। 24 घंटे की सेवा के साथ सीजीएस अस्पताल द्वारा शाम 7 बजे से सुबह 8 बजे तक आपातकालीन सेवाएँ भी प्रदान की जाती है। पालतू जानवरों के बेहतर इलाज़ के लिए सीजीएस अस्पताल मे जयपुर, पटना, इंदौर, असम और यहा तक की दक्षिण भारत जैसे दूरदराज़ शहरों से मरीज आते है।